पंचम अध्याय

# शोध निष्कर्ष तथा सुझाव

# अध्याय पंचम

# शोध निष्कर्ष तथा सुझाव

## 5.1 प्रस्तावना :-

वर्तमान समय में पूर्व प्राथमिक शिक्षा पर अधिक जोर दिया जा रहा है। 6 वर्ष की उम्र समस्त विकास की आधारशिला समझी जाती है। यह आधारशिला मजबूत व सुदृढ़ रहे इसलिए माता के गर्भ से लेकर 6 वर्ष तक बालकों के विकास पर सरकार एवं अन्य संस्थाओं का अधिक ध्यान केन्द्रित किया जा रहा है। ग्रामीण तथा शहरी श्रमिक परिवारों के इस संदर्भ में अनेक प्रयास किये गये जिनमें से एक एकीकृत बाल विकास परियोजना है। जिसके अंतर्गत आंगनवाड़ियाँ संचालित की जाती है ताकि इन क्षेत्रों में जहां सुविधाओं तथा जागरूकता की कमी है वहां बच्चों के विकास से संबंधित समस्त पक्षों पर जानकारी दे सके बच्चों में विभिन्न कौशलों का विकास किया जा सके। आंगनवाड़ी केन्द्र द्वारा संचालित विभिन्न कार्यों को निश्चित मानदण्डों के आधार पर तय किया गया है। शोधकर्ता द्वारा इन्हीं कार्यों के क्रियान्वयन का अध्ययन किया गया है कि इनका संचालन किया जा रहा है क्या वे भली भाँति उन कार्यों को कर रहे है? कुछ लाभ हो रहा है या नहीं? शोधकर्ता का यह अध्ययन इसी संदर्भ में एक प्रयास है।

## 5.2 समस्या कथन :-

पूर्व प्राथमिक शिक्षा कार्यक्रम के क्रियान्वयन का अध्ययन-जलगांव जिले के संदर्भ में।

## 5.3 अध्ययन के उद्देश्य :-

1. पूर्व प्राथमिक शिक्षा कार्यक्रम के विभिन्न पहलुओं (पोषक आहार, स्वास्थ्य जाँच, टीकाकरण एवं समन्वय व सेवा) के क्रियान्वयन का कार्यकर्ताओं के परिप्रेक्ष्य में अध्ययन।
2. पूर्व प्राथमिक शिक्षा कार्यक्रम के क्रियान्वयन के संदर्भ में अभिभावकों के दृष्टिकोण का अध्ययन ।
3. पूर्व प्राथमिक शिक्षा कार्यक्रम के संबंध में कार्यकर्ताओं व अभिभावकों का तुलनात्मक अध्ययन ।
4. मूलभूत संरचनाओं एवं कार्यान्वयन का निरीक्षणात्मक अध्ययन ।

## 5.4 शोध कार्य की परिसीमाएँ -

1. प्रस्तुत अध्ययन महाराष्ट्र राज्य के जलगाँव जिले तक सीमित है।
2. प्रस्तुत अध्ययन जलगाँव जिले के अमलनेर तहसील की 10 आँगनवाड़ियों तक ही सीमित है।
3. प्रस्तुत अध्ययन आँगनवाड़ियों के कार्यकर्ताओं तक ही सीमित है।
4. प्रस्तुत अध्ययन आँगनवाड़ियों के क्रियान्वयन तक ही सीमित है।

## 5.5 अध्ययन विधि :-

1. **न्यादर्श-** प्रस्तुत अध्ययन के लिए चुने गये न्यादर्श में जलगांव जिले की 10 आंगनवाड़ी केन्द्रों को शामिल किया गया है। जिसका चयन यादृच्छिक विधि द्वारा किया गया है।
2. **उपकरण-** प्रस्तुत अध्ययन के लिए प्रदत्त संकलन हेतु ृोधकर्ता द्वारा निम्नलिखित दो उपकरणों का निर्माण किया गया। प्रश्नावली, अवलोकन सूची।

3. **अध्ययन विधि** – प्रस्तुत अध्ययन एक वर्णानात्मक सर्वेक्षण है। जिसमें जलगांव जिले के आंगनवाड़ी केन्द्र का वर्तमान परिदृश्य को जानने का प्रयास किया गया है।

## 5.6 प्रदत्त का संकलन :-

प्रस्तुत अध्ययन संबंधित प्रदत्त संकलन के लिए शोधकर्ता ने स्वयं निर्मित उपकरणों द्वारा प्रदत्तों का संकलन भ्रमण करके किया है। प्रदत्त संकलन के लिए प्रश्नावली आंगनवाड़ी कार्यकर्ता एवं अभिभावकों के लिए तैयार की गयी तथा अवलोकन सूची केन्द्र के लिए तैयार की गयी है। इन उपकरणों से प्राप्त जानकारी को एकत्रित करके तालिकाबद्ध कर विश्लेषण तथा व्याख्या की गयी है। प्रदत्तों के विश्लेषण तथा व्याख्या का वर्णन चतुर्थ अध्याय में किया।

## 5.7 निष्कर्ष :-

1. सभी कार्यकर्ता एवं अभिभावक पोषक आहार से संतुष्ट पाये गये।
2. आंगनवाड़ी से संबंधित समस्त अभिलेखों की निरन्तर पूर्ति एवं पर्यवेक्षकों द्वारा जाँच पाई गई।
3. आंगनवाड़ी केन्द्रों की देख–रेख के कारण क्षेत्र में रोगों की संख्या घटी पाई गई।
4. सभी आंगनवाड़ियों में चार्ट, पीने का पानी एवं प्राथमिक उपचार सामग्री पाई गई। खिलौने पाये गये जो कि टूटे हुए व पुराने थे।
5. प्राथमिक उपचार सामग्री उपयोगी नहीं पाई गई।
6. जितने बच्चे शिक्षा के लिए नामांकित है उतने बच्चों की उपस्थिति आंगनवाड़ी में नहीं पाई गई।

7. 80 प्रतिशत आंगनवाड़ियों में शौचालय नहीं पाया गया।

8. 70 प्रतिशत कार्यकर्ता बदलाव लाना चाहते हैं।

9. सभी आंगनवाड़ियाँ एक कमरे में ही संचालित पाई गई।

10. सभी कार्यकर्ता प्रशिक्षित पाये गये।

11. सभी कार्यकर्ता आय से असंतुष्ट से पाये गये।

इस प्रकार निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि पूर्व प्राथमिक शिक्षा कार्यक्रम का क्रियान्वयन संतोषजनक नहीं पाया गया।

## 5.8 सुझाव :-

कार्यकर्ताओं व अभिभावकों द्वारा प्रस्तावित सुझाव व सुझावों की व्यवहारिकता को दृष्टि में रखते हुये कार्यक्रम को प्रभावी कार्यन्वयन के लिए निम्न सुधार किये जा सकते है।

1. आंगनवाड़ी केन्द्र के लिए स्थायी भवन हो, जिसमें खुला स्थान होना चाहिए। खुले स्थान पर पेड़, पौधे लगाने चाहिए।
2. प्राथमिक उपचार सामग्री का स्टॉक उपयोगी हो ताकि उसका उपयोग किया जा सके।
3. भौतिक सुविधाओं की सामग्री को बढ़ाया जाये।
4. कार्यकर्ताओं को समय पर केन्द्र खोलने के लिए निरन्तर उनका निरीक्षण करना चाहिए।
5. पोषक आहार की मात्रा बढ़ाई जाय।

## 5.9 शोध हेतु सुझाव :-

शोधकर्ता ने शोध के उद्देश्य तथा समय सीमा को ध्यान में रखते हुये शोधकार्य को पूर्ण किया। परन्तु इससे संबंधित अन्य निम्नलिखित पहलुओं पर शोधकार्य करने की गुंजाइश है।

1. आंगनवाड़ी कायकर्ता के प्रशिक्षण से संबंधित कार्यक्रम के प्रभाविता का अध्ययन करना।
2. आंगनवाड़ी संचालन हेतु कार्यकर्ताओं द्वारा सामना किये जा रहे व्यवधानों का अध्ययन करना।
3. पूर्व प्राथमिक स्तर पर शिक्षण में संगीत विधि की प्रभावोत्पादकता का अध्ययन करना।
4. पूर्व प्राथमिक विद्यालय के शिक्षकों में निहित मूल्यों का अध्ययन करना।
5. इस अध्ययन को वृहद न्यादर्श पर किया जा सकता है।